NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

हिन्दी

N-201

Chapter wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

N.I.O.S. *Class – X*

National Institute of Open Schooling

By :
Sanjay Jain M.A., B.Ed.

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 350/-

CONTENTS

हिन्दी

Based on: **NATIONAL INSTITUTE OF OPEN SCHOOLING – X**

S.No.	*Chapters*	*Page*
	Solved Sample Paper - 1	**1–6**
	Solved Sample Paper - 2	**1–6**
	Solved Sample Paper - 3	**1–5**
	Solved Sample Paper - 4	**1–6**
	Solved Sample Paper - 5	**1–6**

S.No.	*Chapter*	*Page*
1.	बहादुर *(अमरकांत)*	1
2.	दोहे	11
3.	गिल्लू *(महादेवी वर्मा)*	22
4.	आह्वान *(मैथिलीशरण गुप्त)*	29
5.	रॉबर्ट नर्सिंग होम में *(कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर')*	35
6.	भारत की ये बहादुर बेटियाँ	41
7.	आजादी *(बालचंद्रन चुल्लिक्काड; अनुवाद : असद ज़ैदी)*	48
8.	चंद्रगहना से लौटती बेर *(केदारनाथ अग्रवाल)*	55

S.No.	Chapter	Page
9.	अखबार की दुनिया	65
10.	पढ़ें कैसे?	78
11.	सार-लेखन	84
12.	इसे जगाओ *(भवानी प्रसाद मिश्र)*	96
13.	सुखी राजकुमार *(ऑस्कर वाइल्ड)*	101
14.	बूढ़ी पृथ्वी का दुख *(निर्मला पुतुल)*	109
15.	अंधेर नगरी *(भारतेंदु हरिश्चंद्र)*	116
16.	अपना-पराया *(हरसरन सिंह विश्नोई)*	123
17.	बीती विभावरी जाग री *(जयशंकर प्रसाद)*	133
18.	नाखून क्यों बढ़ते हैं? *(हजारीप्रसाद द्विवेदी)*	142
19.	शतरंज के खिलाड़ी *(प्रेमचंद)*	149
20.	उनको प्रणाम! *(नागार्जुन)*	157
21.	पत्र कैसे लिखें	163
22.	निबंध कैसे लिखें	179
★	व्याकराणिक प्रयोग	214

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

Solved Sample Paper - 1

Based on NIOS (National Institute of Open Schooling)

हिन्दी – X

समय : 3 घण्टे] [पूर्णांक : 100

निर्देश: सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के रूप में दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प छांटकर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए–

***(i)* 'इसे जगाओ' कविता में किसे जगाने के लिए कहा गया है?**

(क) जो थककर सो गया है।
(ख) जिसे सपने देखना अच्छा लगता है।
(ग) जो घबराकर भागता है।
(घ) जो सच से बेखबर है।

उत्तर–(घ) जो सच से बेखबर है।

***(ii)* 'मानवीकरण' अलंकार का अर्थ है–**

(क) जो मानव नहीं, उसे मानव के रूप में कल्पित करना।
(ख) दूसरों के सुख-दु:ख को अपना सुख-दु:ख मानना।
(ग) पेड़, पहाड़, नदी आदि के प्रति चिंता प्रकट करना।
(घ) सच्चा मनुष्य बनाने का प्रयास करना।

उत्तर–(क) जो मानव नहीं, उसे मानव के रूप में कल्पित करना।

***(iii)* 'आज़ादी' कविता में 'आज़ादी' शब्द का मतलब है–**

(क) कुछ भी करने की छूट
(ख) अनिवार्य आवश्यकता की पूर्ति
(ग) उच्छृंखलता और स्वच्छंदता
(घ) कर्म से मुक्ति

उत्तर–(ख) अनिवार्य आवश्यकता की पूर्ति।

***(iv)* रहीम के दोहे में 'अब दादुर वक्ता भए' से कवि का क्या आशय है?**

(क) समझदारों की इज्ज़त होती है
(ख) कोयल ने मौन साध लिया
(ग) मूर्ख मंच पर आ पहुंचे
(घ) मेढकों ने कूकना शुरू कर दिया

उत्तर–(घ) मेढकों ने कूकना शुरू कर दिया।

***(v)* 'उनको प्रणाम!' कविता के अनुसार सपने देखना कब सार्थक होता है?**

(क) जब उनके लिए प्रयास किए जाएं
(ख) जब उनका अनुकरण किया जा सके
(ग) जब उनका प्रचार किया जा सके
(घ) जब वे सच हो सकें

उत्तर–(क) जब उनके लिए प्रयास किए जाएं।

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिए–

(क) कवि वृंद के दोहे–'करत-करत अभ्यास में जड़मति होत सुजान।' में 'अभ्यास' शब्द से क्या तात्पर्य है?

उत्तर–यहां 'अभ्यास' शब्द से तात्पर्य यह है कि मूर्ख व्यक्ति भी निरंतर प्रयास या एक ही कार्य को बार-बार करके चतुर और ज्ञानवान बन जाता है। ठीक उसी तरह जैसे कोमल रस्सी के निरंतर आने-जाने से कुएं की जगत के कठोर पत्थर पर उसका निशान बन जाता है।

(ख) 'लो यह लतिका भी भर लाई मधु-मुकुल नवल रस गागरी।' इस पंक्ति का क्या भाव है?

उत्तर–इस पंक्ति का भाव यह है कि लता अर्थात बेल भी अपने अधखिले फूल रूपी गगरी में नया रस भर लाई है। बेल पर नई-नई रसभरी कलियां दिखाई देने लगी हैं अर्थात फूल खिल उठे हैं।

(ग) 'बूढ़ी पृथ्वी का दु:ख' कविता में पृथ्वी को 'बूढ़ी' क्यों कहा गया है?

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-114, प्रश्न 4

(घ) 'इसे जगाओ' कविता में सोए हुए व्यक्ति को जगाने के लिए किनसे अनुरोध किया गया है?

उत्तर–कविता में सोए व्यक्ति को जगाने के लिए सूरज, पवन, पंछी से अनुरोध किया गया है, क्योंकि ये सभी सदैव क्रियाशील रहते हैं। यहां सोए हर व्यक्ति से तात्पर्य कर्महीन व्यक्ति से है।

(ङ) 'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता में सरसों को सयानी क्यों कहा है?

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-60, प्रश्न 3

(च) कवि ने 'आह्वान' कविता में किन्हें पौरुष का पाठ पढ़ने का संदेश दिया है?

उत्तर–कवि ने आलसी एवं कायर लोगों पौरुष का पाठ पढ़ने का संदेश दिया है, उन्होंने कहा है कि स्वतंत्रता के लिए गुलामी की जंजीरें तोड़ दो, भाग्य के भरोसे रहना छोड़कर परिश्रम, अपनी शक्ति और अपने साहस पर भरोसा करें।

प्रश्न 3. निम्नलिखित काव्यांश किस पाठ से लिया गया है? इसके कवि के नाम का उल्लेख करते हुए काव्यांश का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

www.neerajbooks.com

देख आया चंद्रगहना
देखता हूँ दृश्य अब मैं
मेंड़ पर इस खेत की बैठा अकेला।
एक बीते के बराबर
यह हरा ठिगना चना,
बांधे मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का,
सज कर खड़ा है।

उत्तर–निम्नलिखित काव्यांश 'चन्द्रगहना से लौटती बेर' कविता से लिया गया है। इसके कवि 'श्री केदारनाथ अग्रवाल' हैं। उन्होंने इस काव्यांश में ग्राम्य प्रकृति का बड़ा ही अनुरागमय चित्रण किया है। चने के पौधे को सजीव रूप में दर्शाने के कारण मानवीकरण अलंकार है। जैसे–मानो बित्ते भर का पेड़ गुलाबी पगड़ी सिर पर बांधे सजे-संवरे दूल्हे-सा खड़ा है। चने को 'ठिगना' अर्थात छोटे कद का कहना अपने आप में ही काव्य के सौंदर्य को प्रकट करता है। कवि ने सामान्य जन-जीवन की भाषा-शैली का प्रयोग किया है। शब्दों का सौंदर्य, ध्वनियों की धारा और स्थापत्य की कला है। इसमें कलात्मक और मनोरम शब्दों तथा मानवीकरण अलंकार का प्रयोग है। तद्भव शब्दों के साथ देशज शब्दों (मुरैठा, बीते) का भी प्रचुर प्रयोग है।

अथवा

नैना देत बताय सब, हिय को हेत-अहेत।
जैसे निरमल आरसी, भली-बुरी कहि देत।

उत्तर–प्रस्तुत दोहा 'वृन्द' कवि द्वारा रचित है। कवि इस दोहे द्वारा यह बताना चाहता है कि हमारे नयन हमारे मन के भावों को प्रकट कर देते हैं। कवि ने इस दोहे में 'बोली' का भली-भांति कुशलता से प्रयोग किया है। इस दोहे में आया 'आरसी' शब्द द्विअर्थी है। एक दर्पण, दूसरा भूषण। कवि ने नयनों को दर्पण के समान मन के रहस्य खोलने वाले पारदर्शी माध्यम के रूप में प्रयुक्त करते हुए उन्हें दर्पण की तरह मन के भाव को प्रकट करने वाले कारक के रूप में बताया है। इसमें नैना शब्द नयन का तद्भव है। हिय का हेत-अहेत में अनुप्रास अलंकार है। उदाहरणों और अलंकारों से भाषा और अभिव्यक्ति का सौंदर्य बढ़ जाता है।

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 25-25 शब्दों में लिखिए–

(क) 'बीती विभावरी जाग री' कविता में भोर के समय प्रकृति में क्या-क्या परिवर्तन हो रहे हैं? वर्णन कीजिए।

उत्तर–प्रातः काल प्रकाश होने पर पक्षियों का कलरव सुनाई देने लगा है, मंद-मंद चलती हवा से कोपलों का आंचल डोलने लगा है। लताएं भी अधखिले फूलों की गागर में नव रस भर रही हैं अर्थात फूल खिल उठे हैं। ऊषा की लाली से तारे छिपने लगे हैं, आकाश का रंग आसमानी दिखने लगा है।

(ख) 'आह्वान' कविता में 'आगे बढ़ो, ऊँचे चढ़ो' पंक्ति द्वारा देशवासियों को कवि क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर–इस पंक्ति के द्वारा कवि देशवासियों को अपनी उन्नति के लिए कर्म का महत्त्व समझाना चाहता है। वह कहता है कि अपने अतीत को, गौरव को याद करो और देखो आज हम कितने पिछड़ गए हैं। हमसे पिछड़े देश और समाज हमसे आगे बढ़ गए हैं। अतः हे देशवासियो! जागो और भाग्य के भरोसे न बैठकर पुरुषार्थ करो, तभी हम अपना पुराना वैभव और गौरव वापस पा सकते हैं।

(ग) 'उनको प्रणाम' कविता में असफल लोगों के प्रति अभिव्यक्त दृष्टिकोण का स्पष्टीकरण कीजिए।

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-20, पृष्ठ-161, प्रश्न 5

(घ) 'आज़ादी' कविता के आरंभ में शार्गिद आजादी का क्या अर्थ समझता था?

उत्तर–बछड़े का चरागाह में मस्ती से कूदना, सूरज पर घोंसला बनाने के लिए साहस करती चिड़िया का साहस, उत्तर दिशा में दौड़ती रेल, थके होने पर निश्चिंत सोना अर्थात स्वतंत्र होकर विचरण करना, स्वच्छंद रहना, साहस का कार्य करना, लगातार काम में जुड़े व्यक्ति का काम से मुक्त होना ही शार्मिद आजादी का मतलब समझता था।

प्रश्न 5. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 50 शब्दों में दीजिए–

'उनको प्रणाम' कविता को दृष्टि में रखते हुए आप अपने किसी एक सपने के बारे में बताएं, जिसे पूरा करने में आपने भरसक प्रयत्न किया हो।

उत्तर–जब भी सपनों का जिक्र होता है, तो देश के पूर्व राष्ट्रपति स्व. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का यह कथन हमें बरबस याद आ जाता है। हर इंसान की आंखों में कोई-न-कोई सपना जरूर बसा होता है, जिसे साकार करने का संकल्प लिए वह निरंतर प्रयासरत रहता है।

डॉक्टर बनने का मेरा भी एक सपना था, जिसे पूरा करने के लिए मैंने बहुत कोशिश की। मेडिकल की पढ़ाई भी शुरू की, परन्तु घर के खराब हालात के कारण पढ़ाई पूरी नहीं कर पाई, लेकिन अपनी पढ़ाई करने की कोशिश को जारी रखा और एक अध्यापिका अवश्य बनी। सही मायने में हमें हमारे सपने ही हमें परिश्रम करने की ताकत देते हैं और ऊंची उड़ान भरना सिखाते हैं।

अथवा

'बीती विभावरी जाग री' को दृष्टि में रखते हुए आप शहरी जीवन की किसी सुबह का वर्णन कीजिए।

उत्तर–शहरी जीवन की सुबह में भोर नहीं, बल्कि सीधे सूर्योदय होता है। सुबह कितने बजे जागना है या रात कितने बजे सोए थे, नाईट शिफ्ट थी या लेट ड्यूटी थी, इस पर डिपेंड करता है। शहरी जीवन की सुबह अखबार वाले की और दूधवाले की घंटी से शुरू होती है। पक्षियों की चहचहाट तो होती है, लेकिन फेरी वालों और मोटर-गाड़ियों के भोंपुओं की आवाजों के बीच सुनाई नहीं पड़ती है। लोग जिम में कसरत करते हुए दिखाई देते हैं। पार्कों से बड़े-बुजुर्गों के ठहाकों की आवाजें आती है। लोग सड़कों पर दौड़ते-भागते नजर आते हैं। मानो शहर में अफरा-तफरी मच गई हो। सभी अपने-अपने काम पर जाने की तैयारी में लगे होते हैं।

प्रश्न 6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के रूप में दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प छांटकर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए–

***(i)* 'अपना-पराया' पाठ के आधार पर बताइए कि रक्त की श्वेत कणिकाएं–**

(क) रोगाणुओं का भोजन बन जाती हैं।
(ख) निष्क्रिय रहती हैं।
(ग) रोगाणुओं से लड़ती हैं।
(घ) रोगाणुओं को ऊतक तरल तक पहुंचाती हैं।

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

हिन्दी–X

Based on: NATIONAL INSTITUTE OF OPEN SCHOOLING – X

बहादुर

–अमरकान्त

1

पाठ का सार

'बहादुर' कहानी अमरकान्त की उल्लेखनीय कहानी है। स्वाधीनता के बाद कहानी बदलते परिवेश की समस्याओं को समेटकर चलती हुई नई कहानी के रूप में सामने आई। अमरकान्त भी नई कहानी के स्तम्भों में गणनीय हैं।

यहाँ कहानी का एक पात्र यह कहानी सुना रहा है–यह वाचक है। इसमें अपने परिवार व रिश्तेदारों के माध्यम से कम उम्र के घरेलू नौकरों के प्रति मध्यम वर्ग के व्यवहार का चित्रण किया गया है। दरअसल हमारे समाज का वह वर्ग जो अमीर तो नहीं है, पर ठीक-ठाक खाता-पीता है (गरीब नहीं है) मध्यवर्ग कहा जाता है। हमारे देश में आजादी के बाद यह मध्यवर्ग काफी बढ़ गया है।

वाचक का परिवार मध्यवर्गीय है और महानगरों में नौकर-चाकर का होना उच्चवर्गीय घरों में ही नहीं, मध्यवर्गीय परिवारों में भी स्टेटस का प्रतीक बनने लगा। स्वयं वाचक परिवार की एक शादी में नौकर का रुतबा देख चुका था। उसकी पत्नी को भी एक अदद नौकर का होना कसकने लगा, इसीलिए इस घर में भी नौकर का आगमन हुआ। वह बारह-तेरह वर्ष का, ठिगना, ठोस शरीर वाला, आधी बाँह की कमीज, सफेद नेकर व भूरे रंग के जूते पहने, गले में स्काउट की तरह रूमाल। उसे लेकर वाचक के साले साहब आए थे।

यह एक नेपाली बालक, सौतेली माँ से त्रस्त घर से हंडिया में से दो रुपए चुराकर भाग खड़ा हुआ। पूरा इन्टरव्यू लिया गया। घर में प्यार व इज्जत से रखा जाएगा। यदि यहाँ रह गया, तो पढ़-लिख जाएगा। उसकी जिन्दगी सुधर जाएगी, पड़ोस-मुहल्ले में घुलने-मिलने की जरूरत नहीं। ऐसी नई हिदायतें व आश्वासन दिए गए। इसी क्रम में दिलबहादुर से उसका नाम बहादुर पड़ गया।

जैसा सामान्यतया होता है कि प्रारंभ में घर में उसका पूरा ध्यान रखा गया। जो सब खाते, वही उसे दिया जाता, लेकिन पहले पूरे घर के काम का बोझ बहादुर के कंधों पर आता है। भूल-चूक होने पर उसे डाँट पड़ने लगी। घर का युवक (वाचक का पुत्र) सबसे पहले उसकी पिटाई करता है। उसे डाँट-फटकार के बाद भी हंसता देख मन में विपरीत भाव जागने लगे। गृहिणी निर्मला ने उसकी रोटियाँ बनानी बंद कर दीं और कहा कि अपनी रोटियाँ स्वयं सेंक ले, क्योंकि मुहल्ले की किसी स्त्री ने निर्माता के 'नौकर के प्रति उस भाव का विरोध किया–'नौकर है, अपनी रोटी खुद बनाए, वह क्यों बनाकर दे।' वह उसे रोटी न बनाने पर पीटती भी है और फिर वह उस दिन रोटी भी नहीं खाता, फिर बाद में अपनी रोटी स्वयं बनाने लगता है।

एक बार घर में कुछ रिश्तेदार आते हैं। वे ग्यारह रुपए की चोरी का दोष बहादुर पर लगाते हैं। वाचक इस बात से क्रुद्ध होकर बहादुर को बहुत बुरी तरह पीटता है। निर्मला भी पीटती है। उसकी आंख में आंसू आ जाते हैं। असल में वह पिटता तो पहले भी था, पर अब की बार की पिटाई ने उसके मन में भय जगा दिया। पहले तो किशोर या माँ जी मारती थी, अब गृहस्वामी भी मारने लगा। इसका उसे बहुत दुख हुआ।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

एक बार घर की मसाला पसीने की सिल उससे गिरकर टूट जाती है। वह डरकर सोचता है कि अब तो सब उसे मारेंगे। वह पहले की पिटाई याद करके काँप उठता है और डरकर चुपके से भाग खड़ा होता है। वह अपना सामान भी वहीं छोड़ जाता है।

बहादुर के घर से जाने के बाद निर्मला को अपनी गलती का पश्चाताप होता है कि घर के सारे काम अब उन्हें स्वयं करने पड़ेंगे, आराम छिन जाएगा। वाचक को बहादुर के जाने का बहुत दुख होता है, क्योंकि वह सोचता है कि यदि वह उसे न मारता, तो वह न भागता, क्योंकि वह अपनी तन्ख्वाह के पैसे व कपड़े तक छोड़ गया था। वह स्वाभिमानी निकला और सही मायने में रिश्तेदारों के पैसे भी उसने नहीं चुराए थे। झूठा अपराध लगा था उस पर। इससे वाचक पश्चाताप करते हुए सोचता है – नौकर भी इंसान होते हैं। उसके साथ निर्दयता यहाँ पश्चाताप का कारण बनती है। यहीं कहानी समाप्त हो जाती है।

बोध प्रश्न

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. "माँ-बाप का कर्जा तो जन्मभर भरा जाता है"–यह वाक्य किसका है?

(क) निर्मला का (ख) वाचक का
(ग) बहादुर का (घ) किशोर का

उत्तर–(ग) बहादुर का।

प्रश्न 2. ''देख बे, मेरा काम सबसे पहले होना चाहिए। अगर एक भी छूटा, तो मारते-मारते हुलिया टाइट कर दूँगा।'' यह कथन किसका है?

(क) बहादुर का (ख) वाचक का
(ग) किशोर का (घ) रिश्तेदार का

उत्तर–(ग) किशोर का।

प्रश्न 3. ''महीन खाने से नौकरों की आदत बिगड़ जाती है।''–यह बात निर्मला से किसने कही?

(क) उसके पति ने (ख) पड़ोसिन ने
(ग) उसके बेटे ने (घ) रिश्तेदार ने

उत्तर–(ख) पड़ोसिन ने।

पाठगत प्रश्न 1.1

प्रश्न 1. बहादुर ने काम करने से मना कर दिया, क्योंकि

(क) उसे अपने घर की बहुत याद सताने लगी।
(ख) निर्मला ने उसके लिए रोटियाँ नहीं सेंकी।
(ग) उस पर चोरी का झूठा आरोप लगाया गया।
(घ) किशोर ने उसे गाली दी, जो उसके बाप पर पड़ती थी।

उत्तर–(घ) किशोर ने उसे गाली दी, जो उसके बाप पर पड़ती थी।

प्रश्न 2. कहानी में वाचक किस वर्ग का है?

(क) निम्न (ख) सामंत
(ग) मध्य (घ) उच्च

उत्तर–(ग) मध्य।

प्रश्न 3. बहादुर बहुत संवेदनशील है, क्योंकि

(क) वह सिल टूटने पर घर से भाग जाता है।
(ख) सभी के लिए दौड़-भाग कर काम करता है।
(ग) मारपीट का उस पर कोई प्रभाव नहीं होता।
(घ) झूठे आरोप लगने पर भी वह घर से नहीं भागता।

उत्तर–(क) वह सिल टूटने पर घर से भाग जाता है।

प्रश्न 4. "माँ-बाप का कर्जा तो जन्मभर भरा जाता है", बहादुर के इस कथन से पता चलता है कि

(क) उसे माँ-बाप द्वारा लिया गया कर्जा चुकाना है
(ख) उसे माँ-बाप के प्रति अपने कर्त्तव्य का बोध है
(ग) उसके माँ-बाप जीवनभर कर्ज चुकाते रहे
(घ) उसने माँ-बाप से बहुत सारा पैसा लिया है

उत्तर–(ख) उसे माँ-बाप के प्रति अपने कर्त्तव्य का बोध है।

पाठगत प्रश्न 1.2

प्रश्न 1. नीचे दिए गए वाक्यों में से सही के आगे सही (√) और गलत के आगे गलत (×) का निशान लगाइए–

(क) संवाद कहानी घटना-क्रम को आगे बढ़ाते हैं, लेकिन पात्रों की विशेषताएँ नहीं बताते।
(ख) वाचक द्वारा पाठक से सीधे बातचीत किए जाने के कारण 'बहादुर' कहानी में संवाद अधिक है।
(ग) सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक स्थितियों एवं वातावरण के कारण व्यक्ति के व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है।
(घ) मध्यवर्ग केवल रहन-सहन और खान-पान में ही दिखावा नहीं करता, भाषा के स्तर पर भी करता है।

उत्तर–(क) (×), (ख) (√), (ग) (√), (घ) (√)

प्रश्न 2. 'बहादुर' कहानी के अंत में क्या अभिव्यक्त नहीं होता?

(क) घृणा
(ख) पछतावा

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(ग) दुख

(घ) अपराध-बोध

उत्तर–(क) घृणा।

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्द-समूह में से बेमेल शब्द-समूह को चुनिए–

(क) **तत्सम**–निस्संदेह, वातावरण, अनुमान

(ख) **आगत**–सुपुर्द, हिदायत, तकलीफ

(ग) **तद्भव**–आँखें, खेत, बँसखट

(घ) **देशज**–तीता, पुलई, खटना

उत्तर–(ग) तद्भव–आँखें, खेत, बँसखट

प्रश्न 4. बहादुर घर में 'फिरकी की तरह नाचता रहता' का आशय है कि वह

(क) काम करने से बचने के लिए छिपता फिरता था।

(ख) दिनभर बहुत उछल कूद मचाता रहता था।

(ग) मार खाने के कारण चीख-पुकार मचाता रहता था।

(घ) काम करने के लिए इधर से उधर दौड़ता रहता था।

उत्तर–(घ) काम करने के लिए इधर से उधर दौड़ता रहता था।

क्रियाकलाप 1.1

प्रश्न 1. माँ द्वारा पीटे जाने पर बहादुर घर से भाग जाता है। बहादुर की जगह आप होते, तो निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प चुनते? चुने गए विकल्प के पक्ष में अपने तर्क भी लिखिए–

(क) भागकर अपने किसी रिश्तेदार के यहाँ चले जाते।

(ख) घर की परिस्थितियाँ समझकर माँ की सहायता करते।

विकल्प :

तर्क :

विकल्प–(ख) घर की परिस्थितियाँ समझकर माँ की सहायता करते।

तर्क–यदि बहादुर की जगह मैं होता तो घर से भागने की जगह यह समझने का प्रयास करता कि माँ पिटाई क्यों करती है। उसे मुझ पर गुस्सा क्यों आता है। माँ पर बच्चों के पालन-पोषण का भार होता है और पिता के न होने पर तथा गरीबी के कारण माँ की समस्या और बढ़ जाती है। ऐसे में बच्चों को केवल खेलकूद में लगे रहने की जगह माँ के कामों में ही हाथ बँटाना चाहिए। यह भी समझना चाहिए कि कौन-सी चीजें घर के लिए जरूरी हैं और उनकी देखभाल करनी चाहिए।

क्रियाकलाप 1.2

प्रश्न 1. जब दिल्ली में बम–विस्फोट हुए, तो एक गुब्बारे बेचने वाले लड़के ने पुलिस को जीवित बम की सूचना देकर न जाने कितने लोगों की जान बचाई। आपकी दृष्टि में फुटपाथों पर काम करने वाले किशोर और क्या–क्या ज़िम्मेदारियाँ निभाते हैं, या निभा सकते हैं? यहाँ लिखिए।

उत्तर–सामान्यत–यह धारणा है कि फुटपाथों पर काम करने वाले लड़के-लड़कियाँ नासमझ और अनपढ़ होते हैं। वे गलत संगति में रहते हैं तथा गैर-जिम्मेदार होते हैं किंतु ऐसा नहीं है। फुटपाथों पर काम करने वाले अधिकांश लड़के-लड़कियाँ जिम्मेदार होते हैं जो खेलने की उम्र में काम कर अपने माँ-बाप की मदद करते हैं। ऐसे बच्चे अनेक जिम्मेदारियाँ निभा सकते हैं। वे किसी की संदिग्ध सामान या व्यक्ति अथवा लावारिस वस्तु या वाहन, गलत कार्यों की सूचना पुलिस को देकर गंभीर वारदात होने से रोक सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति बूढ़ा या विकलांग है तो उसे सड़क पार करा सकते हैं। वे लोगों को रास्तों की जानकारी दे सकते हैं।

क्रियाकलाप 1.3

प्रश्न 1. कहानी के आरंभ में आपने वाचक द्वारा बहादुर का रेखाचित्र पढ़ा। अपने किसी मित्र, परिजन या परिचित का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए :

उत्तर–मेरे परम मित्र की आयु 36 वर्ष है। वे गोरे-चिट्टे एवं स्वस्थ हैं। उनका कद लंबा है लगभग छह फुट। उनकी आँखें भूरी हैं। चेहरा लंबा और माथा चौड़ा है वे बहुत हँसमुख तथा मजाकिया हैं। जब वे हँसते हैं तो उनके मोतियों जैसे दाँत उनकी सुंदरता को और बढ़ा देते हैं। वे सदैव खुश रहते हैं तथा औरों को भी खुश रखने की कोशिश करते हैं।

पाठांत प्रश्न

प्रश्न 1. वाचक के लिए नौकर रखना किन कारणों से आवश्यक था? आपकी दृष्टि में क्या वे कारण उचित थे? उल्लेख कीजिए।

उत्तर–वाचक के लिए नौकर रखना कई कारणों से जरूरी हो गया था। उसके सभी भाई और रिश्तेदार अच्छे पदों पर थे और उन सभी के यहाँ नौकर थे। वाचक जब अपनी बहन की शादी में घर गया, तो वहाँ उसने नौकरों का सुख देखा। उसकी दोनों भाभियाँ रानी की तरह बैठकर चारपाइयाँ तोड़ती थीं; जबकि वाचक की पत्नी निर्मला को सवेरे से लेकर रात तक काम में रहना पड़ता था। नौकर का यह सुख देखकर वाचक ईर्ष्या से जल उठा। इसके बाद जब वह घर

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

वापस आया, तो निर्मला दोनों समय नौकर-नौकर की माला जपने लगी। नौकर के अभाव में निर्मला को लगता कि उसकी तरह अभागिन व दुखिया स्त्री और भी कोई इस दुनिया में होगी ? शायद वे लोग दूसरे ही होते होंगे, जिन्हें नौकर का सुख मिलता है । बस इन्हीं सब कारणों से वाचक के लिए भी नौकर आवश्यक हो गया ।

प्रश्न 2. 'बहादुर' कहानी के आधार पर मध्यवर्गीय परिवार की कुछ प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–दरअसल हमारे समाज का वह खाता-पीता हिस्सा जो बहुत अमीर तो नहीं, मगर गरीब भी नहीं हैं; मध्यवर्ग कहलाता है । वाचक का परिवार मध्यवर्गीय है । यहाँ मध्यवर्गीय परिवार की कुछ प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार देखी जा सकती हैं–

- सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए, रिश्तेदार-संबंधियों में अपने पद के लिहाज से, दूसरों से किसी भी प्रकार कम न दिखाई देने या बराबर स्तर का दिखाने के लिए नौकर रखना जरूरी समझना ।
- सोशल स्टेटस सिम्बल मानना ।
- दर्शाना यह कि नौकर घर का एक सदस्य होता है – फटे-पुराने कपड़े, सोने के लिए टूटी झंगोला बांस खाट ।
- स्वयं हीनभावना से ग्रस्त होना लेकिन पड़ोसियों, संबंधियों, रिश्तेदारों को अपने सामने तुच्छ समझना।
- सारे काम का भार बेचारे नौकर के कन्धों पर डाल देना।
- नौकर होते ही डाँट-फटकार सहने, पिटने के लिए हैं । बच्चे का नौकर के प्रति दुर्व्यवहार देखकर भी नौकर को ही नसीहत देना । मध्यवर्गीय होकर सामन्त की तरह व्यवहार करना । अंग्रेजी वाक्य प्रयोग से अपने आभिजात्य का प्रदर्शन आदि कुछ मध्यवर्गीय प्रवृत्तियाँ इस कहानी के माध्यम से स्पष्ट झलकती हैं ।

प्रश्न 3. जब बहादुर को अपने घर की याद आती थी, तो वह क्या करता था?

उत्तर–वह जेब से निकालकर नेपाली टोपी पहन लेता, आइना निकालकर बंदर की तरह उसमें अपना मुँह देखता, कुछ देर अपनी चीजों से खेलता, फिर धीमे-धीमे स्वर में गुनगुनाने लगता–उनका अर्थ भले ही हमारी समझ में न आए, पर उनकी मीठी उदासी सारे घर में फैल जाती, जैसे कोई पहाड़ की निर्जनता में अपने बिछुड़े साथी को बुला रहा हो । ऐसे वह अपनी यादों में सो जाता।

प्रश्न 4. बहादुर और किशोर के व्यवहार में अंतर के कारणों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–बहादुर और किशोर के व्यवहार में अंतर का कारण उनकी पारिवारिक स्थिति थी। बहादुर एक गरीब घर का लड़का था। उसकी माँ भी उसकी उपेक्षा करती थी। उससे घर का सारा काम करवाती थी। साथ ही उसे मारती-पीटती भी थी।

किशोर एक मध्यवर्गीय परिवार का लड़का था। उसे अपने घर-परिवार से प्रेम और सभी सुख-सुविधाएँ मिली थीं।

पारिवारिक स्थिति में अंतर के कारण ही बहादुर को दुख सहने की आदत पड़ गई थी। वह हर बुरी स्थिति में भी प्रसन्न रहने की चेष्टा करता था, क्योंकि उसे पता था कि उसका साथ देने वाला कोई नहीं है। दूसरी ओर किशोर था जिसे पता था कि उसका परिवार उसके साथ है। उसे जो चाहिए, वह मिल जाएगा। इसी कारण वह उग्र हो जाता है और अनुशासन के नाम पर बहादुर पर अत्याचार करने लगता है।

प्रश्न 5. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) उसकी हँसी बड़ी कोमल और मीठी थी, जैसे फूल की पंखुड़ियाँ बिखर गई हों।

उत्तर–बहादुर भोला-भाला निष्कपट स्वभाव का बालक था, इसलिए जब वह हँसता था, तो ऐसा लगता था कि मानो किसी फूल की पंखुड़ियाँ बिखर गई हों । यहाँ बहादुर के लिए फूल का आरोप उसके निर्मल भोलेपन के लिए प्रयुक्त हुआ है ।

(ख) उन पहाड़ी गानों का अर्थ हम समझ नहीं पाते थे, पर उनकी मीठी उदासी सारे घर में फैल जाती, जैसे कोई पहाड़ की निर्जनता में अपने किसी बिछुड़े हुए साथी को बुला रहा हो।

उत्तर–नेपाली भाषा का अपना शब्द-संयोजन व मुहावरा होता है। हम उन सबके अर्थ न भी जानने पर जब उन्हें सुनते हैं, तो उनमें छिपे प्रेम और पीड़ा व बिछोह के भाव अपनी नैसर्गिक मिठास बिखेर देते हैं; जैसे सुनसान पर्वत की चोटी पर बैठा मन अपने मीत को पुकार रहा है ।

प्रश्न 6. बहादुर के व्यक्तित्व पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर–बहादुर एक बारह-तेरह साल का लड़का है। उसका कद छोटा तथा शरीर भरा हुआ है। उसका रंग गोरा है। वह एक संवेदनशील बालक है। सुख और दुख उसे तुरंत प्रभावित करते हैं। माँ के बुरे व्यवहार से उसे दुख पहुँचता है और वह घर से भाग जाता है। वह स्वाभिमानी है, इसलिए चोरी का झूठा आरोप सहन नहीं करता। वह मेहनती और ईमानदार है। वह उपेक्षा और अपमान नहीं सह सकता। इसी कारण पहले वह अपने घर से और बाद में वाचक के घर से भी भाग जाता है।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

प्रश्न 7. 'बहादुर' कहानी की भाषा की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

उत्तर–अमरकान्त की कहानी 'बहादुर' की पहली विशेषता यही है कि भाषा प्रथम दृष्टि में सरल, अकृत्रिम एवं सामान्य मध्यवर्गीय परिवार की झलक देती है । कहानी की भाषागत विशेषताओं को निम्नलिखित रूप में देख सकते हैं–

कहानी की भाषा पात्रों के अनुकूल है । सभी पात्रों के संवाद, बोलने का ढंग अलग-अलग है। उदाहरण के रूप में, नेपाली बहादुर नाम पूछने पर बताता है–दिल बहादुर खान/वह मारता क्यों था (माँ के लिए), तकलीफ बढ़ जाएगा (स्त्रीलिंग क्रिया का पुल्लिंग में प्रयोग), क्योंकि बहादुर नेपाली होने के कारण हिन्दी क्षेत्र जैसी हिन्दी नहीं बोल सकता था ।

निर्मला की भाषा घरेलू मध्यवर्गीय महिलाओं वाली है। जैसे–'बहादुर आकर नाश्ता क्यों नहीं कर लेते ? मैं दूसरी औरतों की तरह नहीं हूँ, जो नौकर-चाकर को तलती-भूनती हैं । मैं तो नौकर-चाकर को अपने बच्चे की तरह रखती हूँ ।'

किशोर की भाषा देखिए–"देख बे, मेरा काम सबसे पहले होना चाहिए । अगर एक काम भी छूटा, तो मारते-मारते हुलिया टाइट कर दूँगा ।" ऐसी भाषा का प्रयोग न वाचक कर सकता था और न निर्मला।

निर्मला के रिश्तेदार के व्यक्तित्व का पता अंग्रेजी के इस एक वाक्य से चल जाता है–"यू डू नॉट नो–दीज़ पीपुल आर एक्सपर्ट इन दिस आर्ट ।" यही वाक्य हिंदी में होता, तो इसमें मध्य वर्ग का वह घमंड और नौकरों के प्रति घृणा न होती, जो अंग्रेजी में होने पर है।

अगर हम किसी के दोषों पर चोट करते हैं, तो हमारी भाषा में व्यंग्य आ जाता है । इस कहानी की भाषा में व्यंग्यात्मकता है ।

प्रयोग–हमारी बोलचाल की भाषा की यह विशेषता होती है कि उसमें तत्सम, तद्भव और अनेक भाषाओं के शब्द चले आते हैं । उसमें हम मुहावरों और वस्तुओं की श्रेष्ठता या विशेषता बताने के लिए विभिन्न उपमाओं का भी प्रयोग करते हैं । इस कहानी में ये सभी बातें मिलती हैं; जैसे

तत्सम शब्द–गंभीर, दायित्व, स्वच्छ, संतुष्टि, प्रफुल्लता, उत्साहपूर्ण, वातावरण, निःसंदेह, काल्पनिक, अनुमान, पोषण, व्यावहारिक, अनुशासन, नित्य, पूर्ति, विलम्ब ।

तद्भव शब्द–आँखें, पुराना, भाई, बहन, अभागिन, पेड़, खेत, मीठी, घर, तेज, आँसू आदि ।

अन्य देशज शब्द–मलकाना, जून, चकइठ, खटना, शऊर, पुलई, बँसखट, सवांग, तोता, गुस्सैल, चौका, घाघ ।

आगत शब्द–हिदायतें, फरमाइश, फिक्र, तकलीफ, गोया, तनख्वाह, शान-शौकत, बरदाश्त, अफसोस, सुपुर्द, फरमाईश, महीनावारी, कायल ।

अंग्रेजी–रिपोर्ट, यू डू नॉट नो दीज पीपल आर एक्सपर्ट इन दिस आर्ट ।

मुहावरे–चमकती दृष्टि से देखना, चारपाइयाँ तोड़ना, ईर्ष्या से जल जाना, हाथ बँटाना, ठनकाना, गुस्से से पागल हो जाना, नौ-दो ग्यारह हो जाना, सीधे मुँह बात न करना, फिरकी की तरह नाचना, पेट में लंबी दाढ़ी होना, कहीं का न रहना आदि ।

उपमाएँ–भालू की तरह दौड़ना, बंदर की तरह शीशे में मुँह देखना, कुत्ते की तरह दुरदुराना आदि ।

कहानी कहने का तरीका शैली कहलाता है । यह कहानी गृहस्वामी द्वारा वाचक के रूप में अपने घर-जीवन में घटने वाली घटना की प्रस्तुति के रूप में है, तो यह आत्मकथा शैली है । इसमें कहीं-कहीं विवरणात्मकता, भावमयता तथा वर्णनात्मकता का पुट भी विद्यमान है । और क्योंकि बहादुर के चरित्र व व्यक्तित्व ने उसके साथ बिताए क्षणों को सामने उपस्थित कर दिया है, अतः इसे रेखाचित्रात्मक कहानी भी कहा जा सकता है ।

प्रश्न 8. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

अभी, अभी-अभी, उछलकर, उछल-उछलकर, घूमकर, घूम-घूमकर, गाकर, गा-गाकर।

उत्तर–**अभी**–रमेश तुम यहीं ठहरो, मैं अभी आता हूँ।

अभी-अभी–तुम थोड़ा लेट हो गए, गाड़ी अभी-अभी छूटी है।

उछलकर–बच्चे ने उछलकर पतंग पकड़ ली।

उछल-उछलकर–बंदर उछल-उछलकर नाच दिखा रहा था, जिससे बच्चे बहुत खुश हुए।

घूमकर–पुल टूट गया था, इसलिए सब लोग घूमकर दूसरी ओर से जा रहे थे।

घूम-घूमकर–दीनदयाल सारा दिन घूम-घूमकर कपड़े बेचता है, तब कहीं जाकर कुछ कमा पाता है।

गाकर–अरे भई! जब संगीत सीखा है, तो कुछ गाकर भी सुनाओ।

गा-गाकर–मैंने सड़क पर दो बच्चों को गा-गाकर भीख माँगते देखा।

प्रश्न 9. निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम, तद्भव, देशज और आगत शब्दों को छाँटिए–

संतुष्टि, खेत, मलकाना, तकलीफ, स्वच्छ, पेड़, शहर, तनख्वाह।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com